Consumer's Equilibrium

उपभोक्ता का संतुलन

Dr. Dinesh Kumar Gupta
(Assistant Professor – Economics)

उपभोक्ता का संतुलन –

आसयः–

एक उपभोक्ता संतुलन में तब होता हैं जब वह वस्तुओं के ऐसे संयोगों को क्रय कर रहा होता है जिससें उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो और ऐसी स्थिति मे उपभोक्ता मे वस्तुओं व सेवाओं के खरीददारी मे कोई परिवर्तन करने की प्रवृत्ति न हों इसके साथ वह अपनी सम्पूर्ण मुद्रा को व्यय कर देता हैं!

एक उपभोक्ता उस समय सन्तुलन की अवस्था में होता है जब वह अपने व्यवहार को वर्तमान परिस्थितियों में सबसे अच्छा मानता हैं! अतः इस अवस्था में उपभोक्ता अपनी दी हुई आय को बाजार कीमतों पर (विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं पर) इस ढंग से खर्च करता है कि उसे व्यय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हों यही उपभोक्ता का संतुलन है!

ऐसी स्थिति मे एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि की अवस्था मे होगा!

यह स्थिति तब प्राप्त होगी जब अनाधिमान वक्र का ढाल बजट रेखा/मूल्य रेखा के ढाल के बराबर हो तथा प्रतिस्थापन की सीमान्त दर भी ऋणात्मक हो!

मान्यतायें – उपभोक्ता के संतुलन को प्राप्त करने की निम्न मान्यताएं हैं

- उपभोक्ता अपनी आय को विवेकपूर्ण ढंग से इस प्रकार से अपना व्यय करता है जिससे उसकी सन्तुष्टि अधिकतम हो सकें!
- उपभोक्ता को मुद्रा एवं वस्तु के उन सभी संयोगों की तथा रूचि–सारिणी का पूर्वज्ञान है जिससे उसे समान सन्तुष्टि मिलती है तथा इस प्रकार की रूचि–सारिणी पूरे विश्लेषण में अपरिवर्तित रहती हैं!
- उसके पास मुद्रा की एक निश्चित मात्रा है जिसे वह उन वस्तुओं पर व्यय कर देगा जिसे वह बाजार मे क्रय करने जा रहा हैं!
- उपभोक्ता अनेक क्रेताओं में से एक है और उसे बाजार का पूर्ण ज्ञान हैं सभी वस्तुओं के मूल्य निश्चित तथा दिये गये है उनके मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होता!
- सभी वस्तुयें विभाज्य (Divisible) और सहजातीय (Homogenous) हैं!
- उपरोक्त मान्यताओं के आधार पर तथा अनधिमान वक्रों व मूल्य रेखा के आधार पर हम उपभोक्ता के संतुलन को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं उपर्युक्त शर्तो के आधार पर एक उपभोक्ता संतुलन में वहां पर होगा!

जिस विन्दु पर मूल्य रेखा का ढाल = अनधिमान वक्र का ढाल

या

वस्तुओं के सीमान्त उपयोगिताओं का अनुपात = वस्तुओं के मूल्यों का अनुपात

रेखाचित्र द्वारा व्याख्या–

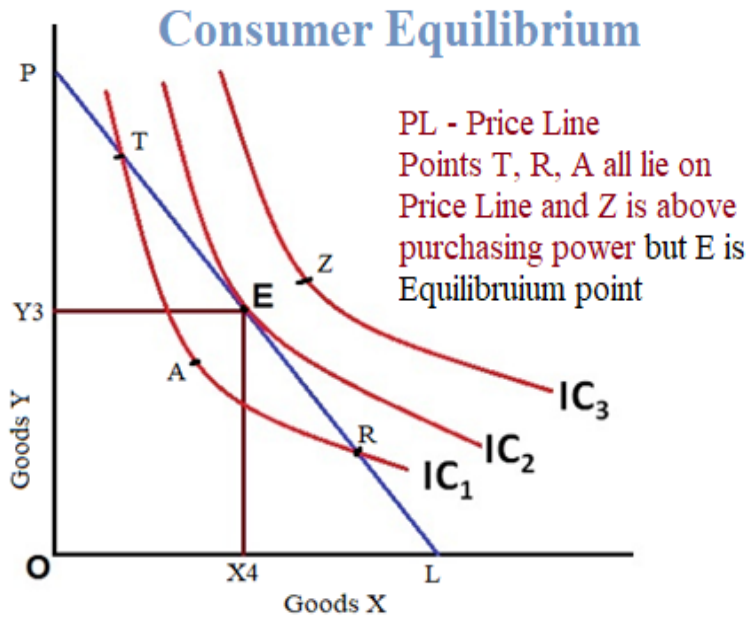

$$MRSxy = \frac{\Delta Y}{\Delta X} = \frac{MUx}{MUy} = \frac{Px}{Py}$$

$$\frac{X \text{ वस्तु की सी0 उप0}}{X \text{ वस्तु का मूल्य}} = \frac{Y \text{ वस्तु की सी0 उप0}}{Y \text{ वस्तु का मूल्य}}$$

$$\text{या } \frac{X \text{ की सी0 उप0}}{Y \text{ की सी0 उप0}} = \frac{X \text{ वस्तु की मूल्य}}{Y \text{ वस्तु का मूल्य}}$$

$$\frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py}$$

$$\text{या, } \frac{MUx}{MUy} = \frac{Px}{Py}$$

रेखाचित्र में सन्तुष्टि के स्तर को प्रदर्शित किया गया है! हम यह भी देख सकते है कि IC_1 की तुलना में IC_2 तथा IC_2 की तुलना में IC_3 ..... अधिक सन्तुष्टि के स्तर को प्रदर्शित किया गया है।यदि किसी प्रकार प्रतिबन्धित नहीं हो तो वह निश्चित रूप से दिए गये मानचित्र में IC3 के Z पर होगा। पर वह विन्दु जहां पर मूल्य रेखा का ढाल अनधिमान वक्र को स्पर्श करे तथा प्रतिस्थापन की सीमान्त दर भी वहां पर ऋणात्मक हो वही विन्दु संतुलन का होगा ओर यह स्थिति IC2 के E विन्दु पर होगी। इस प्रकार संतुलन मे IC का ढाल = मूल्य रेखा का ढाल = घटती प्रतिस्थापन की सीमान्त दर

इस प्रकार उपभोक्ता संस्थिति की स्थिति में वहॉ होगा जहॉ अनधिमान वक्र का ढाल बजट रेखा के ढाल के बराबर हो क्योंकि इस बिन्दु पर MUx/MUy = Px/Py निश्चित है यह वह बिन्दु होगा जो बजट प्रतिबन्ध के अन्दर सम्भावित उच्चतम अनधिमान वक्र पर होगा।

संतुलन के अपवाद–

रेखा में E बिन्दु पर मूल्य का ढाल अनधिमान वक्र कें ढाल के बराबर हैं पर प्रतिस्थापन की सीमान्त दर **बढती होने के कारण यह संतुलन नही हो सकता।**

बिन्दु 'E' पर

$$\frac{MUx}{MUY} = \frac{Px}{Py} = MRSxy\ (+)$$

जो संतुलन के विपरीत स्थिति है।

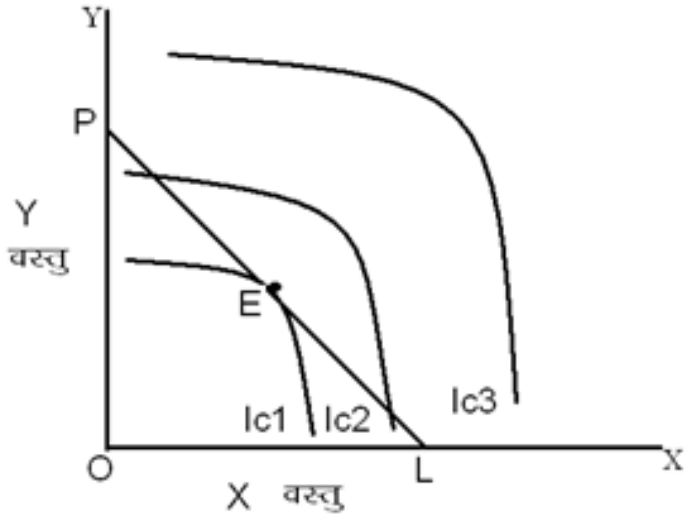

★★★★★★★★

Thank you